रामधारी सिंह दिनकर

रामधारी सिंह 'दिनकर' (23 सितंबर 1908 - 24 अप्रैल 1974) हिंदी साहित्य के इतिहास में एक महान कवि, लेखक और निबंधकार के रूप में जाने जाते हैं। वे अपने युग के सबसे प्रतिष्ठित और प्रभावशाली कवियों में से एक थे, जिन्हें विशेष रूप से वीर रस के कवि के रूप में ख्याति प्राप्त हुई। उनके काव्य में राष्ट्रवाद और सामाजिक-राजनीतिक मुद्दों की झलक मिलती है, जिसके कारण उन्हें 'राष्ट्रकवि' की उपाधि से विभूषित किया गया।

प्रारंभिक जीवन:
दिनकर का जन्म 23 सितंबर 1908 को बिहार के बेगूसराय जिले के सिमरिया गाँव में एक भूमिहार ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनका बचपन कठिनाईयों में बीता। उन्होंने पटना विश्वविद्यालय से इतिहास और राजनीति विज्ञान में स्नातक किया। उन्होंने संस्कृत, बांग्ला, अंग्रेजी, और उर्दू का गहन अध्ययन किया, जिससे उनका साहित्यिक दृष्टिकोण और व्यापक हुआ।

साहित्यिक करियर:
दिनकर जी छायावादोत्तर युग के प्रमुख कवि थे। उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन से प्रेरित होकर कविताएँ लिखी, जो उनके विद्रोही स्वभाव और राष्ट्रीयता की भावना को प्रकट करती हैं। स्वतंत्रता पूर्व, वे एक विद्रोही कवि के रूप में उभरकर सामने आए, और स्वतंत्रता के बाद उन्हें 'राष्ट्रकवि' के रूप में सम्मानित किया गया। उनकी कविताओं में विद्रोह, आक्रोश, ओज, क्रांति की पुकार और कोमल शृंगारिक भावनाओं का समन्वय देखने को मिलता है। उनकी प्रमुख कृतियों में **कुरुक्षेत्र** और **उर्वशी** शामिल हैं।

कुरुक्षेत्र महाभारत के शांति पर्व पर आधारित एक महाकाव्य है, जिसमें विश्वयुद्ध और मानवता के प्रश्नों पर गहन विचार किया गया है। दूसरी ओर, **उर्वशी** एक प्रेमकथा है जो मानवीय प्रेम, वासना और संबंधों की जटिलताओं को दर्शाती है।

राजनैतिक और साहित्यिक योगदान:
दिनकर ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान और बाद में राष्ट्रवादी कवि के रूप में अपनी पहचान बनाई। वे 1952 में राज्यसभा के सदस्य चुने गए और 12 वर्षों तक संसद के सदस्य रहे। इस दौरान, उन्होंने हिंदी और भारतीय संस्कृति के मुद्दों पर अपनी स्पष्टवादिता दिखाई, जिससे कई बार राजनैतिक हलकों में चर्चा का विषय बने। उनके द्वारा संसद में प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के खिलाफ दिए गए भाषण और कविताएँ प्रसिद्ध हैं, जो हिंदी भाषा और भारतीय संस्कृति के प्रति उनके सख्त रुख को दर्शाती हैं।

प्रमुख कृतियाँ:
1. **कुरुक्षेत्र** (1946): महाभारत पर आधारित यह काव्य विश्वयुद्ध के बाद लिखा गया था और इसमें शांति और युद्ध के बीच के द्वंद्व को व्यक्त किया गया है।
2. **उर्वशी** (1961): इस कृति ने उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार दिलाया, जो मानवीय प्रेम और वासना पर आधारित है।
3. **रश्मिरथी** (1952): यह महाकाव्य कर्ण के जीवन पर आधारित है और उनके संघर्ष को उजागर करता है।
4. **परशुराम की प्रतीक्षा** (1963): यह वीर रस से ओतप्रोत काव्य है, जिसमें दिनकर ने प्राचीन पात्र परशुराम के माध्यम से आधुनिक समाज की समस्याओं को उठाया है।

गद्य रचनाएँ:
दिनकर ने कविता के अलावा गद्य साहित्य में भी योगदान दिया। उनकी प्रमुख गद्य रचनाओं में **संस्कृति के चार अध्याय** (1956) शामिल है, जिसमें उन्होंने भारतीय संस्कृति की विविधताओं और एकता का गहन विश्लेषण किया है। इसके अलावा, **रेती के फूल**, **अर्धनारीश्वर**, और **मिट्टी की ओर** जैसी रचनाएँ उनके सामाजिक और सांस्कृतिक चिंतन का प्रत्यक्ष प्रमाण हैं।

सम्मान और पुरस्कार:
1. **पद्म विभूषण**: भारत सरकार द्वारा साहित्य और शिक्षा के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए।
2. **साहित्य अकादमी पुरस्कार**: उनकी कृति **संस्कृति के चार अध्याय** के लिए।
3. **भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार**: उनकी कृति **उर्वशी** के लिए।

4. **विश्व के 100 महान काव्यों में स्थान**: उनके काव्य **कुरुक्षेत्र** को विश्व के 100 सर्वश्रेष्ठ काव्यों में स्थान दिया गया।

दिनकर की साहित्यिक शैली:
दिनकर की कविताएँ मानववादी दृष्टिकोण से भरपूर हैं। उनकी कविताओं में ओज और विद्रोह की शक्ति है, जबकि उनके गद्य में सांस्कृतिक एकता और भारतीयता का बोध होता है। उनकी रचनाओं में सरलता, स्पष्टता और भावनात्मक गहराई का समन्वय देखने को मिलता है। वीर रस में दिनकर ने भूषण के बाद अपनी एक अलग पहचान बनाई, और उन्हें वीर रस का सर्वश्रेष्ठ कवि माना जाता है।

समापन:
रामधारी सिंह 'दिनकर' न केवल हिंदी साहित्य के महान कवि थे, बल्कि वे सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों पर भी गहन चिंतन करने वाले विचारक थे। उनकी रचनाएँ आज भी प्रेरणा का स्रोत हैं, और वे हिंदी साहित्य के अमर कवि माने जाते हैं। उनके योगदान ने हिंदी साहित्य को एक नई ऊँचाई दी, और वे हमेशा अपने लेखन के माध्यम से जीवित रहेंगे।

रश्मीरथी : तृतीय सर्ग

`मैत्री की राह बताने को,

सबको सुमार्ग पर लाने को,
दुर्योधन को समझाने को,

भीषण विध्वंस बचाने को,
भगवान् हस्तिनापुर आये,

पांडव का संदेशा लाये।
'दो न्याय अगर तो आधा दो,

पर, इसमें भी यदि बाधा हो,
तो दे दो केवल पाँच ग्राम,

रक्खो अपनी धरती तमाम।
हम वहीं खुशी से खायेंगे,

परिजन पर असि न उठायेंगे!
दुर्योधन वह भी दे ना सका,

आशिष समाज की ले न सका,
उलटे, हरि को बाँधने चला,

जो था असाध्य, साधने चला।
जब नाश मनुज पर छाता है,

पहले विवेक मर जाता है।
हरि ने भीषण हुंकार किया,

अपना स्वरूप-विस्तार किया,
डगमग-डगमग दिग्गज डोले,

भगवान् कुपित होकर बोले-

'जंजीर बढ़ा कर साध मुझे,

हाँ, हाँ दुर्योधन! बाँध मुझे।
यह देख, गगन मुझमें लय है,

यह देख, पवन मुझमें लय है,
मुझमें विलीन झंकार सकल,

मुझमें लय है संसार सकल।
अमरत्व फूलता है मुझमें,

संहार झूलता है मुझमें।
'उदयाचल मेरा दीप्त भाल,

भूमंडल वक्षस्थल विशाल,
भुज परिधि-बन्ध को घेरे हैं,

मैनाक-मेरु पग मेरे हैं।
दिपते जो ग्रह नक्षत्र निकर,

सब हैं मेरे मुख के अन्दर।
'दृग हों तो दृश्य अकाण्ड देख,

मुझमें सारा ब्रह्माण्ड देख,
चर-अचर जीव, जग, क्षर-अक्षर,

नश्वर मनुष्य सुरजाति अमर।
शत कोटि सूर्य, शत कोटि चन्द्र,

शत कोटि सरित, सर, सिन्धु मन्द्र।

रामधारी सिंह दिनकर की कविता **"रश्मिरथी"** के तृतीय सर्ग की इस अंश में महाभारत के प्रसंग को कवि ने अत्यंत सुंदर और प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है। यह वह क्षण है जब भगवान श्रीकृष्ण हस्तिनापुर जाते हैं और दुर्योधन को पांडवों की ओर से समझाने का प्रयास करते हैं कि युद्ध से बचने के लिए कुछ न्यूनतम शर्तों को स्वीकार कर लें। कविता में यह संवाद और भगवान कृष्ण के विराट रूप का वर्णन किया गया है।

भावार्थ:

- भगवान कृष्ण हस्तिनापुर आते हैं ताकि दुर्योधन को समझा सकें और युद्ध से होने वाले विनाश से बचा जा सके। वे पांडवों का संदेश लेकर आते हैं, जिसमें वे न्याय की मांग करते हैं। यदि पूरे राज्य का बंटवारा संभव नहीं है, तो वे केवल पाँच ग्राम भूमि की मांग करते हैं, ताकि उनका जीवन युद्ध के बिना शांति से बीत सके।

- परंतु, दुर्योधन की अहंकारपूर्ण प्रवृत्ति और सत्ता की लालसा इतनी प्रबल हो जाती है कि वह पाँच ग्राम भूमि देने के लिए भी तैयार नहीं होता। इस प्रकार, वह न केवल कृष्ण का संदेश ठुकरा देता है, बल्कि उलटे उन्हें अपमानित करने की कोशिश करता है और उन्हें बाँधने का प्रयास करता है।

- कविता में यह दिखाया गया है कि जब किसी व्यक्ति पर विनाश का समय आता है, तो सबसे पहले उसका विवेक नष्ट हो जाता है। यही दुर्योधन के साथ होता है, और वह समझ नहीं पाता कि वह कितनी बड़ी गलती कर रहा है।

- इसके बाद श्रीकृष्ण अपने विराट रूप का विस्तार करते हैं और पूरे ब्रह्माण्ड को अपने भीतर समेट कर दिखाते हैं। वे बताते हैं कि संसार का प्रत्येक जीव, ग्रह, नक्षत्र और संहार की शक्ति सब उनके भीतर समाहित है। उन्होंने यह सब दुर्योधन को यह समझाने के लिए किया कि वह कितनी बड़ी शक्ति से लड़ने की कोशिश कर रहा है।

- विराट रूप के माध्यम से कृष्ण यह बताते हैं कि वे स्वयं ब्रह्माण्ड के नियंता हैं और जो कुछ भी है, वह उनके भीतर ही विलीन है। इस दृश्य को देखकर भी दुर्योधन अपनी गलती नहीं समझता, क्योंकि उसका विवेक समाप्त हो चुका है।

सारांश में, यह कविता अहंकार, विवेकहीनता और विनाश के साथ-साथ भगवान की सर्वव्यापकता और शक्ति का प्रतीक है। जब व्यक्ति का विनाश निकट होता है, तो पहले उसका विवेक नष्ट हो जाता है, और वह सही निर्णय लेने की क्षमता खो देता है।

सारांश:

रामधारी सिंह दिनकर की कविता **"रश्मिरथी"** के तृतीय सर्ग में, भगवान श्रीकृष्ण दुर्योधन को युद्ध से बचने के लिए पांडवों का संदेश लेकर हस्तिनापुर आते हैं। पांडव केवल पाँच ग्राम भूमि मांगते हैं ताकि बिना युद्ध के शांति से जीवन जी सकें। लेकिन अहंकारी दुर्योधन न केवल यह मांग ठुकरा देता है, बल्कि कृष्ण को बाँधने की कोशिश करता है।

भगवान श्रीकृष्ण तब अपना विराट रूप दिखाते हैं, जिसमें वे पूरे ब्रह्मांड को अपने भीतर समाहित कर लेते हैं। यह विराट स्वरूप दुर्योधन को उनकी महाशक्ति और सर्वव्यापकता दिखाने के लिए था। लेकिन दुर्योधन, अपने अहंकार और विवेकहीनता के कारण, इसे समझने में विफल रहता है। कविता का यह अंश बताता है कि जब व्यक्ति का विनाश निकट होता है, तो उसका विवेक पहले मर जाता है।

मुख्य संदेश: अहंकार और विवेकहीनता व्यक्ति को विनाश की ओर ले जाती है, जबकि भगवान की सर्वशक्तिमानता से किसी का बच पाना असंभव है।

उद्देश्य:

रामधारी सिंह दिनकर की कविता **"रश्मिरथी"** के तृतीय सर्ग का मुख्य उद्देश्य यह दिखाना है कि अहंकार और विवेकहीनता व्यक्ति को विनाश की ओर ले जाती है। इस कविता के माध्यम से कवि यह संदेश देना चाहते हैं कि जब व्यक्ति पर अहंकार हावी हो जाता है, तो वह सही और गलत का अंतर नहीं समझ पाता, और

अंततः उसका पतन सुनिश्चित हो जाता है। भगवान श्रीकृष्ण के विराट रूप का चित्रण यह बताने के लिए किया गया है कि ईश्वर की शक्ति अनंत और सर्वव्यापी है, और जो इस शक्ति को नकारता है, उसका विनाश निश्चित होता है।

यह कविता लोगों को यह सिखाने का प्रयास करती है कि विनम्रता, विवेक, और न्याय का मार्ग अपनाना ही सच्चे जीवन का आधार होना चाहिए। अहंकार और अन्याय का परिणाम हमेशा विनाशकारी होता है।

रामधारी सिंह 'दिनकर' की **"रश्मिरथी"** के तृतीय सर्ग में भगवान श्रीकृष्ण और दुर्योधन के बीच संवाद, महाभारत के युद्ध से पहले की घटनाओं का कव्यात्मक रूपांतरण है। इस कविता में दिनकर ने कुशलता से कृष्ण के प्रयासों और दुर्योधन के अहंकार को प्रस्तुत किया है। पूरी कविता का भाव और व्याख्या इस प्रकार है:

मैत्री की राह बताने को, सबको सुमार्ग पर लाने को,

दुर्योधन को समझाने को, भीषण विध्वंस बचाने को,

यहां कवि कह रहे हैं कि भगवान श्रीकृष्ण हस्तिनापुर आए ताकि वे दुर्योधन को युद्ध के विनाशकारी परिणामों से बचाने के लिए समझा सकें। उनका उद्देश्य शांति स्थापित करना और दुर्योधन को सही मार्ग पर लाना था।

भगवान् हस्तिनापुर आये, पांडव का संदेशा लाये।

'दो न्याय अगर तो आधा दो, पर, इसमें भी यदि बाधा हो,

तो दे दो केवल पाँच ग्राम, रक्खो अपनी धरती तमाम।

श्रीकृष्ण पांडवों का संदेश लेकर हस्तिनापुर पहुंचे और उन्होंने दुर्योधन से अनुरोध किया कि वह न्याय का पालन करें। पांडवों ने राज्य के केवल आधे हिस्से की मांग की, और अगर यह भी संभव नहीं हो, तो वे केवल पाँच ग्राम भूमि से भी संतुष्ट हो जाएंगे। पांडवों का यह प्रस्ताव बहुत विनम्र और शांति-प्रेरित था। वे संपूर्ण राज्य की मांग नहीं कर रहे थे, बल्कि केवल जीविका के लिए थोड़ी-सी भूमि की मांग कर रहे थे।

हम वहीं खुशी से खायेंगे, परिजन पर असि न उठायेंगे!

दुर्योधन वह भी दे ना सका, आशिष समाज की ले न सका,

पांडवों का यह भी कहना था कि वे बिना किसी लड़ाई के शांति से उस भूमि में रहेंगे और हथियार नहीं उठाएंगे। लेकिन दुर्योधन इतना अहंकारी था कि उसने पाँच ग्राम भूमि भी देने से मना कर दिया। वह समाज का आशीर्वाद भी प्राप्त नहीं कर सका क्योंकि उसकी सोच केवल अहंकार से भरी हुई थी।

उलटे, हरि को बाँधने चला, जो था असाध्य, साधने चला।

जब नाश मनुज पर छाता है, पहले विवेक मर जाता है।

दुर्योधन का अहंकार इतना बढ़ गया था कि उसने भगवान श्रीकृष्ण को ही बाँधने का प्रयास किया। यह एक असंभव कार्य था, फिर भी दुर्योधन ने अपने अहंकार में ऐसा करने की कोशिश की। कवि यहाँ कह रहे हैं कि जब किसी व्यक्ति का नाश निकट होता है, तो सबसे पहले उसका विवेक नष्ट हो जाता है, और वह सही-गलत का फर्क नहीं कर पाता।

हरि ने भीषण हुंकार किया, अपना स्वरूप-विस्तार किया,

डगमग-डगमग दिग्गज डोले, भगवान् कुपित होकर बोले-

भगवान श्रीकृष्ण ने तब अपने विराट स्वरूप का विस्तार किया। उनके क्रोध और स्वरूप की शक्ति से पूरा वातावरण काँपने लगा। सारे महारथी और दिग्गज भी डगमगाने लगे, क्योंकि कृष्ण का विराट रूप अत्यंत भयावह और प्रभावशाली था।

'जंजीर बढ़ा कर साध मुझे, हाँ, हाँ दुर्योधन! बाँध मुझे।

यह देख, गगन मुझमें लय है, यह देख, पवन मुझमें लय है,

कृष्ण ने दुर्योधन से कहा कि अगर वह उन्हें बाँधना चाहता है, तो अपनी जंजीरें लेकर आए और उन्हें बाँधने का प्रयास करे। उन्होंने अपने विराट रूप की महिमा को दिखाते हुए कहा कि आकाश और पवन सब उनके भीतर विलीन हो चुके हैं। यह विराट रूप भगवान की सर्वव्यापकता का प्रतीक है।

मुझमें विलीन झंकार सकल, मुझमें लय है संसार सकल।

अमरत्व फूलता है मुझमें, संहार झूलता है मुझमें।

कृष्ण कहते हैं कि संसार की सारी ध्वनियाँ और क्रियाएँ उनके भीतर लयबद्ध हैं। वे सृष्टि के कर्ता-धर्ता हैं, और अमरत्व और संहार दोनों उनके भीतर हैं। वे ही जीवन और मृत्यु के नियंत्रक हैं।

'उदयाचल मेरा दीप्त भाल, भूमंडल वक्षस्थल विशाल,

भुज परिधि-बन्ध को घेरे हैं, मैनाक-मेरु पग मेरे हैं।

कृष्ण के विराट रूप की महिमा का वर्णन करते हुए, दिनकर कहते हैं कि उनके भाल पर सूर्य की दीप्ति है, उनका वक्ष स्थल विशाल भूमंडल की तरह है, और उनकी भुजाएँ परिधि के समान फैली हुई हैं। उनके पैर मैनाक और मेरु पर्वत के समान विशाल हैं।

दिपते जो ग्रह नक्षत्र निकर, सब हैं मेरे मुख के अन्दर।

'दृग हों तो दृश्य अकाण्ड देख, मुझमें सारा ब्रह्माण्ड देख,

कृष्ण के विराट स्वरूप में सभी ग्रह, नक्षत्र उनके मुख के भीतर समाहित हो गए थे। उन्होंने कहा कि यदि दुर्योधन के पास आँखें हैं, तो वह उनके विराट रूप में समाहित सारा ब्रह्माण्ड देख सकता है।

चर-अचर जीव, जग, क्षर-अक्षर, नश्वर मनुष्य सुरजाति अमर।

शत कोटि सूर्य, शत कोटि चन्द्र, शत कोटि सरित, सर, सिन्धु मन्द्र।

कृष्ण के विराट रूप में चर और अचर, जीवित और निर्जीव, नश्वर और अमर, सभी प्रकार के जीव और प्राणी समाहित हैं। उनके रूप में सैकड़ों करोड़ सूर्य, चंद्रमा, नदियाँ और महासागर समाहित हैं। यह ब्रह्माण्ड का सम्पूर्ण स्वरूप है, जिसे दुर्योधन देख रहा है।

व्याख्या का सार:

इस पूरी कविता में भगवान श्रीकृष्ण के विराट स्वरूप का अद्भुत और प्रभावशाली वर्णन किया गया है। कविता यह दिखाती है कि जब कोई व्यक्ति अहंकार में अंधा हो जाता है, तो वह अपने विनाश की ओर बढ़ने लगता है। दुर्योधन का अहंकार इतना प्रबल था कि उसने भगवान को भी चुनौती दी, जबकि कृष्ण ने अपने विराट रूप में ब्रह्माण्ड की अपार शक्ति और उनकी सर्वव्यापकता को प्रदर्शित किया। कविता का यह अंश हमें सिखाता है कि अहंकार और विवेकहीनता विनाश का कारण बनते हैं, और सच्चा बल और महानता केवल भगवान की कृपा में ही है।

मुख्य संदेश: इस कविता के माध्यम से रामधारी सिंह दिनकर यह बताने का प्रयास करते हैं कि अहंकार और विवेकहीनता के परिणामस्वरूप व्यक्ति विनाश की ओर अग्रसर हो जाता है, और भगवान की महाशक्ति को समझना और स्वीकार करना ही जीवन का सच्चा मार्ग है।

कविता का शीर्षक: रामधारी सिंह दिनकर की महाकाव्यात्मक कृति **"रश्मिरथी"** का तृतीय सर्ग

सप्रसंग व्याख्या:

रामधारी सिंह दिनकर की महाकाव्यात्मक रचना **"रश्मिरथी"** महाभारत के एक प्रमुख पात्र कर्ण पर आधारित है। इसमें कर्ण के जीवन के विभिन्न पहलुओं का विवेचन है, और तृतीय सर्ग वह प्रसंग है जब भगवान श्रीकृष्ण दुर्योधन को पांडवों और कौरवों के बीच युद्ध रोकने के लिए समझाने का प्रयास करते हैं। इस सर्ग में श्रीकृष्ण की शांति की पहल और दुर्योधन के अहंकार की टकराहट को अत्यंत प्रभावशाली और वीर रस में प्रस्तुत किया गया है।

प्रसंग:

यह प्रसंग महाभारत की उस घटना पर आधारित है जब भगवान श्रीकृष्ण पांडवों का संदेश लेकर हस्तिनापुर आते हैं। पांडव युद्ध नहीं चाहते थे, इसलिए उन्होंने न्यूनतम मांग रखी थी कि यदि राज्य का बंटवारा संभव

नहीं है, तो उन्हें केवल पाँच ग्राम भूमि ही दी जाए। परंतु दुर्योधन के अहंकार और सत्ता की लालसा ने उसे इतना अंधा कर दिया था कि उसने यह मांग भी ठुकरा दी। श्रीकृष्ण ने उसे समझाने की कोशिश की, लेकिन जब उसने यहाँ तक कोशिश की कि वह श्रीकृष्ण को बाँधने का प्रयास करे, तब श्रीकृष्ण ने अपना विराट रूप दिखाकर उसे उसकी वास्तविकता से अवगत कराया।

पंक्ति 1-4:

**"मैत्री की राह बताने को, सबको सुमार्ग पर लाने को,

दुर्योधन को समझाने को, भीषण विध्वंस बचाने को,"**

यहां भगवान श्रीकृष्ण के हस्तिनापुर आने का उद्देश्य बताया गया है। कृष्ण शांति और मैत्री का मार्ग अपनाने के लिए हस्तिनापुर आए हैं। वे दुर्योधन को सही मार्ग पर लाना चाहते हैं ताकि महाभारत जैसे विनाशकारी युद्ध से बचा जा सके। इस पंक्ति में कवि यह स्पष्ट करते हैं कि कृष्ण युद्ध नहीं चाहते, बल्कि शांति स्थापित करने के पक्षधर हैं।

पंक्ति 5-8:

**"भगवान् हस्तिनापुर आये, पांडव का संदेशा लाये।

'दो न्याय अगर तो आधा दो, पर, इसमें भी यदि बाधा हो,"**

श्रीकृष्ण पांडवों का संदेश लेकर आए। उन्होंने दुर्योधन से कहा कि यदि वह न्याय कर सके तो राज्य का आधा हिस्सा पांडवों को दे दे। पांडवों की मांग न्यायसंगत और न्यूनतम थी, क्योंकि वे युद्ध से बचना चाहते थे।

पंक्ति 9-12:

**"तो दे दो केवल पाँच ग्राम, रक्खो अपनी धरती तमाम।

हम वहीं खुशी से खायेंगे, परिजन पर असि न उठायेंगे!"**

यदि आधा राज्य भी देना संभव न हो, तो पांडव केवल पाँच ग्राम भूमि पर भी संतुष्ट रहेंगे। वे खुशहाल जीवन जीएंगे और हथियार नहीं उठाएंगे। यहां भगवान श्रीकृष्ण और पांडवों की शांति की भावना का परिचय मिलता है।

पंक्ति 13-16:

**"दुर्योधन वह भी दे ना सका, आशिष समाज की ले न सका,

उलटे, हरि को बाँधने चला, जो था असाध्य, साधने चला।"**

दुर्योधन इतना अहंकारी था कि उसने पाँच ग्राम भूमि भी देने से इनकार कर दिया। उसने न केवल कृष्ण का संदेश ठुकराया, बल्कि उन्हें अपमानित करने की कोशिश की और उन्हें बाँधने का प्रयास किया। यहां दुर्योधन का अहंकार और विवेकहीनता चरम पर दिखाई देती है।

पंक्ति 17-20:

**"जब नाश मनुज पर छाता है, पहले विवेक मर जाता है।

हरि ने भीषण हुंकार किया, अपना स्वरूप-विस्तार किया,"**

कवि यहां एक गहरी बात कह रहे हैं कि जब किसी व्यक्ति का नाश निकट होता है, तो सबसे पहले उसका विवेक नष्ट हो जाता है। इसी प्रकार, दुर्योधन के नाश का समय आ गया था और उसका विवेक समाप्त हो चुका था। इसके बाद भगवान श्रीकृष्ण ने क्रोधित होकर अपना विराट रूप प्रकट किया। उनका हुंकार इतना भीषण था कि पूरा हस्तिनापुर काँप उठा।

पंक्ति 21-24:

**"डगमग-डगमग दिग्गज डोले, भगवान् कुपित होकर बोले-

'जंजीर बढ़ा कर साध मुझे, हाँ, हाँ दुर्योधन! बाँध मुझे।"**

श्रीकृष्ण ने दुर्योधन से कहा कि यदि वह उन्हें बाँधने का प्रयास कर रहा है, तो अपनी जंजीर लेकर आए और उन्हें बाँधे। यहां कवि ने भगवान कृष्ण के भीतर के व्यंग्य और उनकी अद्वितीय शक्ति का प्रदर्शन किया है। यह एक चुनौती थी, लेकिन दुर्योधन उनकी शक्ति से अनभिज्ञ था।

पंक्ति 25-32:

**"यह देख, गगन मुझमें लय है, यह देख, पवन मुझमें लय है,

मुझमें विलीन झंकार सकल, मुझमें लय है संसार सकल।

अमरत्व फूलता है मुझमें, संहार झूलता है मुझमें।

उदयाचल मेरा दीप्त भाल, भूमंडल वक्षस्थल विशाल,

भुज परिधि-बन्ध को घेरे हैं, मैनाक-मेरु पग मेरे हैं।"**

श्रीकृष्ण ने अपने विराट रूप को विस्तार से बताते हुए कहा कि आकाश, वायु और ब्रह्माण्ड का हर कण उनके भीतर विलीन है। संसार की सभी ध्वनियाँ, शक्तियाँ, अमरत्व और संहार, सब उनके भीतर हैं। उनके विराट रूप की महिमा इतनी अद्वितीय और सर्वव्यापक थी कि पूरी सृष्टि उनके शरीर के भीतर समाहित थी। उनका वक्ष विशाल भूमंडल के समान था, और उनके पैर पर्वतों जैसे मजबूत थे।

पंक्ति 33-40:

**"दिपते जो ग्रह नक्षत्र निकर, सब हैं मेरे मुख के अन्दर।

दृग हों तो दृश्य अकाण्ड देख, मुझमें सारा ब्रह्माण्ड देख,

चर-अचर जीव, जग, क्षर-अक्षर, नश्वर मनुष्य सुरजाति अमर।

शत कोटि सूर्य, शत कोटि चन्द्र, शत कोटि सरित, सर, सिन्धु मन्द्र।"**

श्रीकृष्ण ने अपने विराट रूप में बताया कि सभी ग्रह-नक्षत्र, जीव-जंतु, नश्वर और अमर प्राणी, सैकड़ों करोड़ सूर्य, चंद्रमा, नदियाँ और महासागर, सब उनके भीतर समाहित हैं। यहां श्रीकृष्ण की सर्वशक्तिमानता और सर्वव्यापकता का विस्तार से वर्णन है।

सारांश:

इस पूरी कविता का उद्देश्य यह है कि श्रीकृष्ण के विराट रूप के माध्यम से दुर्योधन और संसार को यह सिखाया जाए कि अहंकार और अधर्म से विनाश ही होता है। भगवान की शक्ति और उनकी सर्वव्यापकता के आगे किसी का अहंकार नहीं टिक सकता। दुर्योधन की विवेकहीनता और अहंकार उसके नाश का कारण बनते हैं। दिनकर ने अत्यंत सुंदर ढंग से श्रीकृष्ण के विराट रूप की महिमा और उनकी शक्ति को कविता के माध्यम से व्यक्त किया है।

कविता के अंत में यह स्पष्ट हो जाता है कि जब व्यक्ति का नाश निकट आता है, तो वह अपने विवेक को खो देता है और विनाश की ओर अग्रसर हो जाता है।

काव्यागत विशेषता

रामधारी सिंह दिनकर की कविता **"रश्मिरथी"** के आधार पर उनकी काव्यगत विशेषताओं की चर्चा करते समय यह स्पष्ट होता है कि दिनकर एक बहुआयामी कवि थे, जिनकी रचनाओं में वीर रस, राष्ट्रीयता, सांस्कृतिक चेतना, सामाजिक न्याय और मानवीय संवेदनाओं का अद्भुत संगम मिलता है। उनके काव्य की कुछ प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं:

1. **वीर रस की प्रधानता:**

दिनकर को विशेष रूप से वीर रस का कवि माना जाता है, और "रश्मिरथी" इसका उत्कृष्ट उदाहरण है। उनकी कविता में ओज, आक्रोश, और विद्रोह की भावना प्रकट होती है। श्रीकृष्ण का विराट रूप दिखाने और उनके शक्तिशाली हुंकार का वर्णन वीर रस से ओत-प्रोत है। दिनकर की कविताएँ जोश, बलिदान और कर्तव्य भावना से परिपूर्ण होती हैं, जो पाठकों को प्रेरित करती हैं।

2. **राष्ट्रीयता और सांस्कृतिक चेतना:**

दिनकर की रचनाओं में राष्ट्र के प्रति गहन प्रेम और सामाजिक न्याय की भावना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। **"रश्मिरथी"** में कृष्ण द्वारा शांति का संदेश और दुर्योधन के अहंकार के प्रति कड़ा रुख एक नैतिक दृष्टिकोण से प्रेरित है। दिनकर के काव्य में स्वतंत्रता संग्राम की गूंज और राष्ट्रभक्ति का स्वर प्रमुख रूप से उभरकर आता है। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से भारतीय संस्कृति और उसके आदर्शों का गौरव किया।

3. **मानवीय मूल्य और न्याय की भावना:**

दिनकर के काव्य में सामाजिक न्याय और मानवीय मूल्यों पर बल दिया गया है। "रश्मिरथी" में पांडवों की पांच ग्राम भूमि की न्यूनतम मांग के माध्यम से न्याय और अहिंसा के सिद्धांतों को प्रस्तुत किया गया है। श्रीकृष्ण का दुर्योधन को समझाना इस बात को दर्शाता है कि वे हमेशा न्याय और शांति की स्थापना के पक्षधर थे।

4. **अहंकार का विरोध:**

दिनकर के काव्य में अहंकार का विरोध और विनम्रता का समर्थन मिलता है। इस कविता में दुर्योधन का अहंकार और श्रीकृष्ण के विराट रूप के माध्यम से अहंकार का नाश का संदेश स्पष्ट होता है। दिनकर के काव्य में यह भाव प्रमुख है कि जब व्यक्ति अहंकार में अंधा हो जाता है, तो उसका विनाश निश्चित होता है।

5. **प्रभावी भाषा और सशक्त शिल्प:**

दिनकर की भाषा ओजस्वी और सजीव है, जो वीर रस को पूरी तरह से व्यक्त करती है। उनके शब्दों में जोश, शक्ति और गहराई है, जो पाठकों को आंदोलित करती है। उन्होंने संस्कृतनिष्ठ हिंदी का प्रयोग किया, जिसमें शक्ति और गंभीरता झलकती है। "रश्मिरथी" के इस प्रसंग में श्रीकृष्ण के विराट रूप का वर्णन करते समय जिस प्रकार से दिनकर ने शब्दों का चयन और उनका संयोजन किया है, वह अत्यंत प्रभावी है।

6. **विराट रूप का दार्शनिक और आध्यात्मिक पक्ष:**

दिनकर की कविता में आध्यात्मिक और दार्शनिक गहराई भी देखने को मिलती है। श्रीकृष्ण के विराट रूप के माध्यम से दिनकर ने यह दिखाने का प्रयास किया है कि ब्रह्मांड की समस्त शक्तियाँ भगवान के भीतर समाहित हैं। उन्होंने इस रूप का वर्णन एक अद्वितीय दार्शनिक दृष्टिकोण से किया है, जिसमें सृष्टि की महानता और अनंतता का बोध होता है।

7. **नैतिक शिक्षा और संदेश:**

दिनकर की रचनाओं में हमेशा से एक नैतिक संदेश छुपा होता है। "रश्मिरथी" के इस प्रसंग में पाठकों को यह सिखाया गया है कि अहंकार और अन्याय का अंत निश्चित है। श्रीकृष्ण के विराट रूप के माध्यम से यह संदेश दिया गया है कि जो सत्य और धर्म के मार्ग पर चलता है, वही अंततः विजयी होता है। दुर्योधन की असफलता और कृष्ण का विराट रूप पाठकों को यह नैतिक शिक्षा देता है कि शांति, न्याय, और विनम्रता के बिना जीवन में स्थिरता संभव नहीं है।

8. **चरित्रों का जीवंत चित्रण:**

दिनकर के काव्य में पात्रों का चित्रण बहुत ही सजीव और प्रभावशाली होता है। "रश्मिरथी" में श्रीकृष्ण के विराट रूप और दुर्योधन के अहंकार का चित्रण ऐसा है कि पाठक उसे अपनी आँखों के सामने घटित होते हुए महसूस करता है। दिनकर ने दुर्योधन के अहंकार और श्रीकृष्ण के विराट रूप को जिस सजीवता से वर्णित किया है, वह उनके चरित्र चित्रण की उत्कृष्टता को दर्शाता है।

निष्कर्ष:

रामधारी सिंह दिनकर की काव्यगत विशेषताओं में वीर रस, राष्ट्रीयता, सामाजिक न्याय, अहंकार का विरोध, और प्रभावशाली भाषा का अद्भुत मिश्रण मिलता है। उनकी कविताएँ सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों को प्रकट करती हैं, और पाठकों को नैतिक शिक्षा देती हैं। "रश्मिरथी" का तृतीय सर्ग दिनकर की काव्यशैली, उनके

गहन चिंतन, और उनके प्रभावशाली शिल्प का अद्वितीय उदाहरण है, जो यह दर्शाता है कि वे भारतीय साहित्य में एक अद्वितीय स्थान रखते हैं।